क्या चीज़ है सेट टॉप बॉक्स?

शैलेश मालोदे

सेट टॉप बॉक्स एक बाहरी उपकरण है जो कम्प्यूटर जैसा ही होता है। केबल का कनेक्शन पहले इस सेट टॉप बॉक्स से जोड़ा जाएगा। इसमें ग्राहक का विशिष्ट नंबर फीड किया जाएगा और ट्यूनिंग की जाएगी। सेट टॉप बॉक्स का उपयोग कम्प्यूटर जैसा भी हो सकता है। आपकी अनुपस्थिति में आए विशिष्ट कार्यक्रम रिकार्ड करना इत्यादि फायदे भी इस बॉक्स से हो सकते हैं। टेलिविजन और कम्प्यूटर, दोनों के रूप में यह बॉक्स काम कर सकता है।

उपग्रह और केबल टी.वी. का जाल हमारे सांस्कृतिक जीवन का गला दबा रहे हैं। क्या अब अपने घरों में रखे टी.वी. का भी गला दबाया जाने वाला है। हां, शायद यही स्थिति आने वाली है। जल्दी ही दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता और चेन्नई इन चार महानगरों में *कंडीशनल एक्सेस सिस्टम* (सी.ए.एस. यानी कैस) शुरू हो रही है। इन शहरों के उपभोक्ताओं को भुगतान चैनल देखने के लिए अपने टी.वी. में सेट टॉप बॉक्स लगाना होगा। जिसके कारण मात्र मुम्बई के ही लगभग 20 लाख केबल उपभोक्ताओं पर फंदा कसने वाला है।

सेट टॉप बॉक्स

सेट टॉप बॉक्स मतलब क्या? और वह इन चार महानगरों के उपभोक्ताओं के सर ही क्यों? इस सेट टॉप बॉक्स से क्या फायदा या नुकसान होने वाला है? इस तरह के प्रश्न सभी उपभोक्ताओं के सामने हैं। और इन प्रश्नों को लेकर राजनैतिक समूहों के अलग-अलग मतों के कारण और भी असमंजस की स्थिति पैदा हो गई है। अब सवाल उठता है कि सेट टॉप बॉक्स का प्रश्न ही क्यों पैदा हुआ। क्या यह इतना ज़रूरी था? इन प्रश्नों के बारे में जानना भी बहुत ज़रूरी है।

1970 के शुरुआती दौर में अपने देश में दूरदर्शन का काफी प्रचार-प्रसार हुआ। इसके लगभग 10 साल बाद (एशियाड के कारण) रंगीन टी.वी. का आगमन हुआ। और टी.वी. एक अत्यन्त प्रभावी माध्यम के रूप में उभरा। उस समय दूरदर्शन का ही वर्चस्व था। खाड़ी युद्ध के बाद अनेक

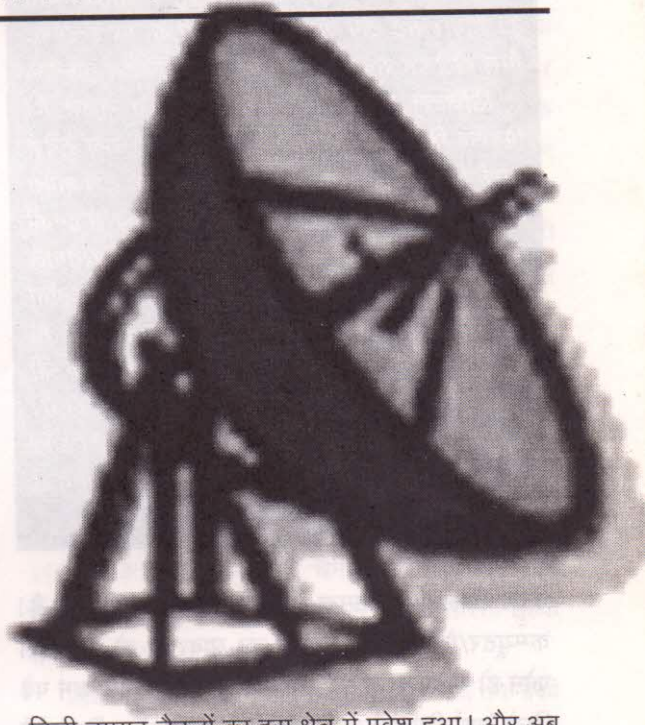

निजी उपग्रह चैनलों का इस क्षेत्र में प्रवेश हुआ। और अब लगभग 10-12 साल बाद टी.वी. उद्योग करवट बदल रहा है। *कंडीशनल एक्सेस सिस्टम* (कैस) से भारतीय दूरदर्शन उद्योग परिचित हो रहा है।

प्रसारण में शामिल लोग अर्थात प्रसारण कंपनियां, केबल ऑपरेटर्स, दर्शक, टी.वी. कार्यक्रमों के निर्माता, विज्ञापनकर्ता, इन सभी पर कैस का प्रभाव पड़ने वाला है। कैस टी.वी. उद्योग के लिए वरदान है या अभिशाप, यह तो लोगों की प्रतिक्रिया पर ही निर्भर करेगा।

बहुत ही कठिन तकनीकी ज्ञान की भी जानकारी हासिल

सेट टॉप बॉक्स के छह प्रकार के हैं

1) एनालॉग सेट टॉप बॉक्स
2) डायल अप सेट टॉप बॉक्स
3) एन्ट्री लेवल सेट टॉप बॉक्स
4) मिडरेंज डिजिटल सेट टॉप बॉक्स
5) एडवान्स डिजिटल सेट टॉप बॉक्स
6) एडवान्स डिजिटल सेट टॉप बॉक्स विथ पी.वी.आर. फन्क्शनैलिटी

एनालॉगिंग के कारण केवल टी.वी. के संदेश मिलते हैं। डायल सेट टॉप बॉक्स होने पर टी.वी. पर इन्टरनेट गैम्स खेले जा सकते हैं। एन्ट्री लेवल डिजिटल तकनीक से डिजिटल चैनल्स के सिग्नल देखे जा सकते हैं। मिडरेंज डिजिटल से चैनल के सर्वर से दोतरफा संदेश संपर्क किया जा सकता है। इसके बाद के सेट टॉप बॉक्स कंप्यूटर जैसे ही होते हैं। हार्ड डिस्क के हिसाब से इनकी कीमत बदलती जाती है। आपके टी.वी. का इस्तेमाल कम्प्यूटर के समान करने पर आपको उसका फायदा होता है। इसी के चलते इन्टरएक्टिव टेलिविजन संभव हो सका है। विशिष्ट प्रोग्राम और उन प्रोग्रामों में दर्शक की सहभागिता इसी तकनीक के कारण संभव हो सकी है। इस तकनीक से मतदान भी किया जा सकता है। ऑन लाइन लॉटरी कार्यक्रम या क्विज़ में आप घर बैठे भाग ले सकते हैं।

करने की लोगों की क्षमता देखकर सचमुच हैरानी होती है। कम्प्यूटर/कैल्क्युलेटर जोड़ने का व्यवसाय हो, मोबाइल फोन हो या अत्याधुनिक ऑडियो सिस्टम, इनमें कम पढ़े लिखे (अर्ध-शिक्षित) लोगों को भी सहजता से शामिल होते देखा जा सकता है। लोगों को आधुनिक तकनीकी ज्ञान के इस्तेमाल के लिए प्रेरित तो किया ही जा सकता है। शर्त सिर्फ एक ही होती है कि यह तकनीकी ज्ञान मनोरंजक, सुविधाजनक और शान-शौकत से युक्त होना चाहिए।

इस मानसिकता को आधार मानें तो इस बात पर कोई विवाद ही नहीं था कि सभी प्रकार का तकनीकी ज्ञान ग्राहक तुरन्त स्वीकार करेंगे। घर बैठे सस्ते मनोरंजन की आदत भारतीय ग्राहकों को इन्हीं चैनल्स ने लगाई है।

इन चैनल्स और दर्शकों के बीच बिचौलिया है केबल तंत्र। इसके भी दो प्रकार है। पहला अपने घर तक आने वाली केबल का चालक और दूसरा मल्टीसिस्टम ऑपरेटर। मतलब उपग्रह से संदेश ग्रहण कर केबल चालकों तक पहुंचाने वाली मशीन। अपने देश में अधिकांश प्रसारण एनालॉग तकनीक की बजाय डिजिटल स्वरूप में होने लगा है। अर्थात अब सारा प्रसारण मूविंग पिक्चर्स एक्सपर्ट ग्रुप तकनीक से होता है। यह एनालॉग विडियो संदेशों को डिजिटल स्वरूप में बदलने की एक विधि है।

इस तकनीक से प्रक्षेपित संदेश ग्रहण करते समय ह्रास बहुत कम होता है। मतलब इसी तकनीक के कारण हमें दूरदर्शन पर अच्छी क्वालिटी के चित्र दिखाई देते हैं। लेकिन इस दौरान केबल ऑपरेटर्स ने अपने कंट्रोल रूम में इन संदेशों को ग्रहण करने के लिए ज़रुरी परिष्कार नहीं किया। जिन्होंने परिष्कार किया उन्होंने यह खर्चा केबल का किराया बढ़ाकर वसूल करना शुरू कर दिया। इस दौरान भुगतान चैनलों में बढ़ोतरी के कारण केबल का किराया और बढ़ गया। इन भुगतान चैनलों ने 'बुके' पद्धति शुरू करके चैनल्स के गुच्छे देना शुरू कर दिया जिसके कारण अनेक अनावश्यक चैनल्स भी इन गुच्छों में आने लगीं। यह मानकर चला गया कि बढ़ा हुआ किराया उपभोक्ता देगा ही। लेकिन केबल कनेक्शन का मासिक किराया जब 250 रुपए से भी अधिक होने लगा तो ग्राहकों ने विरोध करना शुरू कर दिया। केबल चालकों के विरुद्ध कड़े कदम उठाते हुए ग्राहकों ने 150 रुपए से अधिक किराया देने से इंकार कर दिया। केबल चालक सारा दोष मल्टी सिस्टम ऑपरेटर्स और चैनल्स को देने लगे।

इस विवाद पर केंद्रीय प्रसारण मंत्रालय ने एक समिति का गठन किया। समिति में इस विवाद से जुड़े सभी समूहों के प्रतिनिधियों को रखा गया। इस समिति ने ही *'कंडीशनल एक्सेस सिस्टम'* का सुझाव दिया और भुगतान-चैनल्स देखने के इच्छुक लोगों के लिए कैस अर्थात सेट टॉप बॉक्स लगाना ज़रूरी कर दिया। इस मशीन पर बहुत से टैक्स लगने थे। जिसके कारण इसकी कीमत बहुत ज़्यादा थी। केंद्र सरकार ने कुछ समय के लिए टैक्स में छूट दी है। इस छूट के कारण इसकी कीमत काफी कम हो गई है।

इसके लिए अनेक लोगों ने और खासकर मल्टी सिस्टम ऑपरेटर्स ने विविध योजनाएं पेश की हैं।

सेट टॉप बॉक्स और कैस

इस समय सभी केबल उपभोक्ताओं को निश्चित किराए में सभी मुफ्त और भुगतान चैनल्स देखने को मिलते हैं। यह किराया प्रत्येक शहर में ही नहीं बल्कि शहर के विभिन्न भागों में भी अलग-अलग है। ग्राहकों को अपनी पसन्द के चैनल्स चुनने का अधिकार नहीं है। कैस की बदौलत ग्राहकों को अपनी पसन्द के चैनल्स देखने की सुविधा होगी। और भुगतान भी उन्हें चैनल्स के हिसाब से ही करना होगा। मंत्रालय का कहना है कि इस व्यवस्था से कुल मिलाकर पारदर्शिता आएगी। केबल चालक ग्राहकों को सभी चैनल्स देखने के लिए मजबूर नहीं कर सकेंगे।

ग्राहकों को भुगतान चैनल्स देखने के लिए एक सेट टॉप बॉक्स लगाना होगा। इस समय तो यह एक तरह से विलासिता ही है। इस बॉक्स का ठीक से इस्तेमाल करने पर इसका इंटरएक्टिव टेलिविजन के रूप में अच्छा उपयोग हो सकता है। लेकिन सिर्फ मनोरंजन के लिए इतनी ज़्यादा कीमत अदा करने के लिए ग्राहक तैयार नहीं होता।

सेट टॉप बॉक्स एक बाहरी उपकरण है जो कम्प्यूटर जैसा ही होता है। इसे टी.वी. से जोड़ा जा सकता है। केबल का कनेक्शन पहले इस सेट टॉप बॉक्स से जोड़ा जाएगा। इसमें ग्राहक का विशिष्ट नंबर फीड किया जाएगा और ट्यूनिंग की जाएगी। आपके टी.वी. में कितने भी कम चैनल हों इस सेट टॉप बॉक्स में 200 चैनल तक ट्यून हो सकते हैं। सेट टॉप बॉक्स का उपयोग कम्प्यूटर जैसा भी हो सकता है। चैनल सेट करने के अलावा आपकी अनुपस्थिति में आए विशिष्ट कार्यक्रम स्टोर करना (रिकार्ड करना) इत्यादि फायदे भी इस बॉक्स से हो सकते हैं।

टेलिविजन, कंडीशनल एक्सेस और कम्प्यूटर, इन तीनों के कामों के पूरक उपकरण के रूप में यह बॉक्स काम कर सकता है। टी.वी. ट्यूनर, वीडियो डीकोडर का काम भी यह बॉक्स करता है। कंप्यूटर तकनीक के कारण विशेष कार्यक्रम की मांग दर्ज़ करवाने और अन्य अनेक कार्यों के लिए इस बॉक्स का उपयोग किया जा सकता है।

ग्राहक संख्या पर असर

इस समय सेट टॉप बॉक्स और कैस के बारे में जिस तरह के मतभेद और विवाद चल रहे हैं उनके कारण ग्राहकों के मन में भ्रम पैदा हो गया है। इस कारण शायद भुगतान चैनल्स की संख्या कम होगी। और इस बात पर विज्ञापनदाताओं को भी सोचना ही होगा। बहुत सारे विज्ञापनदाताओं ने अनेक टी.वी. कार्यक्रमों को दिए जाने वाले विज्ञापनों की दर निश्चित करने से इंकार कर दिया है। सेट टॉप बॉक्स की बिक्री की स्थिति देखकर और भुगतान चैनल्स देखने वाले ग्राहकों को जांचने परखने के बाद ही टी.वी. कार्यक्रमों को विज्ञापन मिलेंगे। अर्थात भुगतान चैनल्स के ग्राहकों की संख्या कम होने पर विज्ञापन से होने वाले फायदे में कमी और ग्राहक शुल्क में कमी दोनों का ही नुकसान उन्हें उठाना पड़ेगा और उनके पास मुफ्त चैनल्स के अलावा और कोई चारा नहीं होगा।

कैस लागू होने के बाद सेट टॉप बॉक्स के बिना भुगतान चैनल्स नहीं देखे जा सकेंगे। सेट टॉप बॉक्स लगाने की विवशता इन चार महानगरों की सीमाओं में ही होगी। मुफ्त चैनल 110 रु. में उपलब्ध होंगे। इसमें सरकार द्वारा निर्धारित 72 रुपए और मंनोरंजन कर भी शामिल है। 110 रु. के अलावा भुगतान चैनल्स के लिए सेट टॉप बॉक्स की कीमत और भुगतान चैनल्स का अतिरिक्त शुल्क ग्राहकों को देना होगा।

अधिकांश लोगों का मानना है कि निरन्तर नया तकनीकी ज्ञान स्वीकारने व उसके साथ तालमेल बैठाने की भारतीय मानसिकता के कारण कैस अधिक समय टिकने वाला नहीं है। कन्वर्जन्स विधेयक आने वाला है। यह विधेयक पारित होने के बाद ऑप्टिकल फायबर केबल से इन्टरनेट, फोन, टी.वी., कंप्यूटर, रेडियो और इस तरह के अन्यान्य उपकरण चलने लगेंगे। एक तरफ कन्वर्जन्स विधेयक आने वाला है और दूसरी तरफ 'डायरेक्ट टू होम' तकनीक में दूरदर्शन काफी पैसा लगा रहा है। इसलिए ग्राहकों को बहुत सोच समझ कर फैसला लेने की ज़रूरत है। ***(स्रोत फीचर्स)***